रिकार्ड:- वचपन के दिन भुला... ओम शान्ती [illegible]। प्रातः क्लास 8-1-1967

मीठे-2सिकीलधे बच्चों नें यह गीत सुना। ड्रामा प्लान अनुसार [illegible]-2गीत सलैक्ट किये हुये हैं। मनुष्य चकित होते है कि यह क्या नाटक के रिकार्ड्स पर वाणी चलाते है। यह फिर किस प्रकार का ज्ञान है। शास्त्र वेद उपनिष्द आद छोड़ दिये। अब रिकार्ड् के ऊपर वाणी चलाते हैं। यह भी तुम बच्चों की ही वुधी में है हम वेहद के वाप के बने हैं जिनसें अतिइन्द्रिय सुख मिलता है। ऐसे वाप को भूलना नही है। वाप की याद सें ही जन्म जन्मान्तर के पाप दग्ध होनें है। ऐसे नां हो जो याद को छोड़ दो विकर्म रह जायें। तो पद भी कम हो जावेगा। ऐसे वाप को अच्छी रीत याद करने का पुरूषार्थ करना चाहिये। जैसे बच्चे और बच्ची की सगाई होती है तो फिर एक दोषको याद करते है। तुम्हारी भी सगाई हुई है। फिर जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो तव फिर विष्णु पुरी में जावेंगे। अभी शिव बाबा भी है प्राजपिता ब्रहमा बाबा भी है। दो इंजन मिले है।एक निराकार दूसरा साकार। दोनों ही मेहनत करते है कि बच्चे स्वर्ग के लायक बन जावें। स्वगुण-सम्पण. अहिंयां मर्यादा पुरूषोतम बनना है। यहां इमतिहान पास करना है। यह बातें कोई शास्त्रों में नही है। यह पढ़ाई बड़ी वण्डरफुल है भविष्य 2।जन्मों के लिये। और [illegible] पढ़ाईयां होती है मृत्यु लोक के लिये। यह पढ़ाई है अमर लोक के लिये। इसके लिये पढ़ना तो यहां है नां। जब तक आत्मा प्योअर नां बनें सतयुग में जायें नही सकें। इसलिये वाप संगम युग पर ही आते है। इसको पुरूषोतम कल्याणकारी संगम युग कहा जाता है जब कि तुम कौड़ी सें हीरे जैसा बनते हो। इसलिये श्रीमत पर चलते रहो। श्री-2 शिव बाबा को ही कहा जाता है माला का अर्थ भी बच्चों को समझाया है,ऊपर में फूल है शिव बाबा। फिर है युगल मेरू प्रवृती मार्ग है नां। फिर है दाने जो विजय पानें वाले है। रूद्र माला। फिर विष्णु की माला बनती है। इस माला का अर्थ कोई भी नही समझते है। रूद्राक्ष दानें होते है इसमें भी कई प्रकार होते है जैसें चन्दन के वाक्स बनते है, कोई दो रूपयें भी होता है कोई 25रूपये भी होता है। कोई की ऊपर सिर्फ पानी चढ़ा कर खुशवू कर देते है। तो वाप वैठ समझाते है तुम बच्चों को कौड़ी सें हीरे जैसा बनना है।63 जन्म तो वाप को याद करते आयें हो। तुम सभी आशिक हो एक माशूक के। सब भक्ति है एक भगवान की। पतियों का पति, वापों का वाप वो एक ही है। तुम बच्चों को राजाओं का राजा बनाता हूं। खुद नही बनते है। यह बातें शास्त्रों में नही हैं। वाप वार-2समझाते है वाप की याद सें तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप भस्म होगें। साधु सन्त महात्मा तो कह देते आत्मा निर्लेप है। वाप समझाते है कि संस्कार अच्छे वो बुरे आत्मा ही ले जाती है। वो कह देते आत्मा निर्लेप है। कस जिधर देखता हूं सव भगवान ही भगवान है। भगवान ही यह सब लीला करते है। बिलकुल ही वाम मार्गीय गन्दे बन जाते है। ऐसे ऐसों की मत पर भी लाखों मनुष्य चल रहे है। यह भी ड्रामा में नूंध है। बच्चों वुधी में 3 धाम याद रखो। शान्ती धाम जहां आत्मायें रहती है,सुख धाम जहां केलिये तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। दुख धाम भी होता है आधा कल्प वाद। भगवान को कहा ही जाता है हैवनली गाड़फादर। वो कोई हेल नही स्थापन करते है। वाप कहते है मैं तो सुख धाम ही स्थापन करता हूं। बाकी यह हार और जीत का ही तो खेल है। अभी माया रूपी रावण पर तुम श्रीमत सें जीत पाते हो। फिर आधा कल्प वाद रावण राज्य शुरू होता है। इनको कहा ही जाता है अन्धों की औलाद अन्धे। गीता भागवत में भी अक्षर है। वाप खुद कहते है वो है अन्धे कीऔलाद अन्धे। यह है संज्जे।धृतराष्ट्र और युधिष्ठर।तुम बच्चे अभी युध के मैदान में हो। यह भी वुधी धारण करना है और समझाना है। अन्धों की लाठी बन घर का रास्ता बताना है।क्यों कि सभी इस घर को भूल गये है। कहते भी है कि यह एक नाटक है। परन्तु इसकी आयु लाखों हजारों वर्ष कह देते है। वाप स समझाते हैं रावण नें तुमको कितना अन्धा बना दिया है। अभी बाँध सव बातें समझा रहेहै। वाप को ही नालेज फुल कहा जाता है। इसका मतलव यह नही है कि हरएक के अन्दर को जानने वाला है। वो तो रिधी सिधी वाले सीखते हैं। तुम्हारे अन्दर की बातें सुना देते है। नालेज का अर्थ यह नही है। यह तो वाप की ही महिमा है वो ज्ञानों का सागर, आनन्द का सागर है। मनुष्य तो कह देते वो अर्न्तयामी है।

इनको और कोई काम नही है। एक एक के अन्दर को बैठ जानेंगे क्या। अभी तुम बच्चे समझते हो वो तो टीचर है। हमको पढ़ाते है। वो रूहानी बाप भी है। रूहानी टीचर भी है। रूहानी सतगुरू भी है। वो तो जिसमानी होते है सो भी अलग-2। तीनों एक तो हो नही सकते। हाँ कोई-2 बाप टीचर भी होते है। गुरू तो हो ना सके। वो तो फिर भी मनुष्य है। यहाँ तो यह है सुप्रीम रूह है। परमपिता परमात्मा। आत्मा को परमात्मा नही कहा जाता है यह भी कोई समझते नही है। कहते है परमात्मा नें अर्जुन को सा0 कराया। कहा बस करो हम तेज सहन नही कर सकते हैं। यह सब सुना हुआ है तो समझते है परमात्मा तेजो मय है। आगे भक्त के पास आते थे। तो सा0 में चले जाते थे। कहते थे बस करो बहुत तेज है। हम सहन नही कर सकते है। जो सुना हुआ है वो ही बुधी में भरा रहता है। बाप कहते है जो जिस भावना से याद करते हैं मैं वो उनकी भावना पूरी करता हूं। कोई गनेश का पुजारी होगा तो उसको गनेश का सा0 करावेंगे। सा0 होनें से समझते है बस मुक्ति धाम पहुँच गयें। परन्तु नही। मुक्ति धाम में कोई भी जा नही सकते। नारद का भी मिसाल है। वो शिरोमणी भक्त गाया हुआ है। पूछा हम लक्ष्मी को वर सकते है? तो कहा तुम अपनी शक्ल तो देखो। तो देखी बन्दर जैसी शक्ल। भक्त दुर्गती को प्राप्त पायें हुये वो फिर मुक्ति को कैसे पावेंगे। भक्त माला भी होती है। फीमेल में मीरा और मेल में नारद मुख्य गाया हुआ है। यहाँ ज्ञान में फिर मुख्य शिरोमणी सरस्वती नम्बरवार तो है नां। बाप समझाते है माया से बड़ा खबरदार रहना है। माया से उल्टा काम करवा लेगी फिर बाद में रोना पड़ेगा। भगवान आया परन्तु हम वर्सा ले नही सकें। फिर प्रजा में भी दास दासियाँ जाकर बनेंगे। पिछाड़ी में पढ़ाई तो पूरी हो जाती है। फिर बहुत पछताना पड़ेगा। इसलिये बाप पहले से ही समझा देते है ताकी फिर पछताना नां पड़े। जितना बाप को याद करते रहेंगे तो योगाग्नी से पाप भस्म भस्म होंगे। आत्मा सतोप्रधान फिर इसमें खाद पड़ते-2 तमोप्रधान बनी है। गोल्डन एज, सिलवर...नाम भी है नां। अभी आयरन एज़ हो फिर गोल्डन एज़ में जाना है। प्योअर बनने बिना आत्मायें जा नां सकें। सतयुग में प्योअरटी भी है तो पीस भी है। परोसपैरटी भी है। यहाँ प्योअरटी नही तो पीस परापैरटी भी नही है। रात दिन का फर्क है। तो बाप समझाते है यह बचपन भूल नां जाना। बाप नें ऐडाप्ट किया है। ब्रहमा दवारा ऐडाप्ट करता है। यह ऐडाप्टेशन है। स्त्री को ऐडाप्ट किया जाता है। बाकी बच्चों को फिर क्रियेट कहा जाता है। स्त्री को ऐडाप्ट किया जाता है उसको रचना नही कहेंगे। यह भी बाप ऐडाप्ट करते है कि तुम हमारे बच्चे हो। बाप कहते है तुम हमारे वो ही बच्चे हो जिनको कल्प पहले ऐडाप्ट किया था। ऐडाप्टिड बच्चों को ही बाप से वर्सा मिलता है। ऊंच ते ऊंच बाप से ऊंच ते ऊंच वर्सा मिलता है। वो है ही भगवान फिर सैकेंड में है ल0न0 विश्व के मालिक। अभी तुम सतयुग के मालिक बन रहे हो। अभी सम्पूर्ण नही बने हो। बन रहे हो। तुम अभी रूहानी सेवा करते हो। इसलिये तुम बहुत ऊंच हो। शिव बाबा भी पतितों को पावन बनाते है तुम भी पतितों को पावन बनाते हो। रावण ने कितना नालायक बुधी बना दिया है। अभी फिर बाप लायक बना कर विश्व का मालिक बनाते है। ऐसे बाप को फिर पत्थर ठिक्कर ठिक्कर में कैसे कह देते है। बाप कहते है यह भी खेल बना हुआ है। फिर भी ऐसे ही होगा। अभी ड्रामा प्लान, अनुसार आया हूं तुमको समझानें। इसमें ज़रा भी फर्क नही पड़ता है। बाप एक सैकिंड भी देरी नही कर सकते जैसे बाबा को रिइनकारनेशन है तो बच्चों का भी रिइनकारनेशन होता है। तुम भी अवतरते हो। आत्मा यहाँ आकर फिर साकार में पार्ट बजाती है। इसको कहा जाता है अवतरया। ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाना। बाप को यह आलौकिक दिव्य जन्म है। श्रीकृष्ण को तो माता के गर्भ से जन्म मिला नां। बाप खुद कहते है मुझे भी प्रकृती का आधार लेना पड़ता है। मैं इस तन में प्रवेश करता हूं। यह मुकरर तन है। दूसरे कोई में कभी आते ही नही है। हां इन बच्चों में कब मम्मा कब बाबा आ सकते है मदद करने। कब अनन्य बच्चे भी आ सकते है। आगे हम श्रीलक्ष्मीना. को भी बुलाते थे। 36 प्रकार का भोजन बनाते थे। यह बच्चे

आपस में सारा दिन वहलते रहते थे। फिर आ मीत मलुकों का शिकार। यह बच्चे आपस में रवेल पाल करते रहते थे। ध्यान में जाकर डांस करते थे। छोटी-2 बच्चियाँ ऐसे-2 वैठे ध्यान में चली जाती थी। आखों कैकूं कद और वैकुण्ठ में रवेलती रहती थी। यह सव ड्रामा में पटि है। फिर वो आज कहा है? वहुत चली गई। कोई नें तो शादी भी कर ली। वावा जानते है वाम्बे में तो मिलने आती है। वाप वैठ कर सभी वेदों शास्त्रों आद का तुमको सार समझाते है। यह भी शास्त्र पढते थे नां। इनकी तो वहुत गुरू किये हुये है। 12 गुरू किये थे। भक्त गुरू भी थे। कृष्ण के पिछाड़ी तो वहुत डांस करते थे। फिर अनेक हठ योग भी सीखें। फिर वो छोड़ दियें। यह सव पटि फिर भी वजाना है नां।। 84 जन्मों का पार्ट फिर ऐसे ही वजावेंगे। तुमको कितनी क्लीयर नालेज है। सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। महारथियों की वावा महिमा तो करते है नां। यह जो दिरवाते है पाण्डवों और कौरवों की युध हुई वो तो सव है वनावटी वातें। अभी तुम समझते हो वो तो है जिसमानी डवल हिंसा। तुम हो रूहानी डवल अहिंसक। वादशाही लेनें लिये तुम देरवो वैठे कैसे हो। जानते हो वाप की याद से हमारे विकर्म विनाश होंगें। यह फुरना लगा होना चाहिये। और हैं। मेहनत सारी याद करने में ही है। इसलिये भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है। वो वाहर वाले भी भारत का प्राचीन योग सीरवना चाहते है। समझते है साधु लोग हमको यह योग सिरवायेंगे। वास्तव में वो सिरवाते कुछ भी नही है। उनका सन्यास है ही हठ योग का। तुम हो प्रवृती मार्ग वाले। तुम्हारी शुरू में ही किंगडम थी। अव है अन्त। अभी तो पंचायती राज्य है। शास्त्रों में कितनी झूठी वातें लिरव दी है। कहते है द्रोपदी को 5 पति थे। चकराता में भी माईयां 5 पति करती है। यह सारा गन्द इन शास्त्रों में से निकला है। पण्डतों आद को समझाओ तो मानते भी है क्योंकि यह ठीक है परन्तु यह कहे कि शिव वावा भगवान है शिव भगवानोवाच्य है, नां कि कृष्ण भगवानोवाच्य। तो सव उनको कहें तुमको व्रहमा कुमारियों का जादु लगा है। भागो यहाँ से। धन्धा ही रवत्म हो जावें। ऐसे वहुत आते हैं। मास-2 आकर रहते है कहते है अव हम जाकर सर्विस करेंगें। वस फिर रवत्म हो जाते। दुनिया में अन्धकार तो वहुत है नां। अव तो रवूने नाहक रवेल होना है। यह भी एक रवेल दिरवाते है। यह तो है वेहद की वात। तुम जानते हो कितना रवून होगा। नैचरल कलेमिटज भी होगी। सवका मौत होगा। इसको रवूने नाहक कहा जाता है। इसमें देरवने की वडी हिम्मत चाहिये। डरपोक तो झट वेहोश हो जावेंगे। इसमें नीडर पना वहुत चाहिये। तुम तो शिव शक्तियाँ हो नां। शिव वावा है सर्वशक्तिवान हम उनसें शक्ति लेते है। पतित सें पावन वनने की युक्ति वाप ही वताते हैं। वाप विलकुल सिम्पल राय देते है। तुम सतोप्रधान सें तमोप्रधान वने हो। अव वाप कहते है मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन सतोप्रधान वन जावेंगे। आत्मा को वाप के साथ योग लगाना है तो पाप भस्म हो जावेंगें। यथार्थ भी वाप ही है। चित्रों में दिरवाते है विष्णु की नाभी से व्रहमा निकला। इन दवारा वैठ कर सभी वेदों शास्त्रों का सार सुनाया। यह तुम जानते हो व्रहमा सो विष्णु। विष्णु सो व्रहमा वनते है। व्रहमा दवारा स्थापना। फिर जो स्थापना करते है पालना भी जरूर वो ही करेंगें। यह सव राज़ अच्छी रीत समझाये जाते है। समझते हो इनको यह रवयाल रहेगा कि कैसे सवको यह रूहानी ज्ञान मिलना चाहिये। हमारे पास धन है तो जाकर सेन्टर्स रवोलों वहुतों का कल्याण होगा। वाप कहते है अच्छा किराये पर ही मकान लेलो। उसमें हासपिटल कम यूनिवरसिटी रवोलों। योगी से है मुक्ति ज्ञान से जीवन मुक्ति इसमें सिर्फ तीन पैर पर पृथ्वी के चाहिये। और कुछ नही। गाड फादरली यूनिवरसिटी रवोलों। आगे हमने यूनिवरसिटी अक्षर लिरवा था। तो गवर्मेन्ट नें यूनिवरसिटी नाम रखने नही दिया। अव विश्व विदयालय तो नाम रखा है। अव विश्वविदयालय यां यूनिवरसिटी वात एक ही है। कितना समझाया अरे:- यह गाडफादरली यूनिवरसिटी है जिसमें मनुष्य से देवता वनने की नालेज देते है। कितना समझाया परन्तु कहा कि गवर्मेन्ट का कायदा नही है। अव उनसे कौन माथा मारे हर एक की मत अपनी-2 है। अच्छा मीठे-2 वच्चों को नमस्ते।